नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर महोत्सव
लंगाटा - नाइरोबी

मूल्य रु। ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक ११३ • सितम्बर-२०१६

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर महोत्सव
लंगाटा - नाइरोबी

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११३

सितम्बर-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	हरिमंदिर की सेवा	०६
०४.	"ये तो मुल्क के बादशाह है।"	०८
०५.	श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर महोत्सव लंगाटा - नाईरोबी	१०
०६.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुखकी अमृतवाणी	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१९
०८.	सत्संग बालवाटिका	२१
०९.	भक्ति सुधा	२३
१०.	सत्संग समाचार	२६

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

इसके बाद महाराज बोले कि –

''श्रीमद् भागवत मां जेवुं उपाख्यान भरतजीनुं चमत्कारी छे तेवी तो कोई कथा चमत्कारी नथी । केम जे भरतजी तो ऋषभ देव भगवान ना पुत्र हता, ने भगवानने अर्थे समग्र पृथ्वीनुं राज्य त्याग करीने वनमां गया हता । अने त्यां भगवाननुं भजन करता थका मृगलीना बच्चाने विषे पोताने हेत थयुं त्यारे ते मृगने आकारे पोतानी मननी वृत्ति खई गई । पछी एवा मोटा हता तो पण ते पापे करीने मृगनो अवतार आव्यो । इसलिये अनंत प्रकार के पाप हैं लेकिन ते सर्वे पाप थकी भगवानना भक्तने भगवान विना बीजे टेकाणे जे हेत करवुं ते अति मोटुं पाप छे । माटे जे समजु होय ने ते जो ए भरतजीनी वात विचारे तो अंतरमां अति बीक लागे जे, रखे भगवान विना बीजे ठेकाणें हेत थई जाय । एवी रीतनी अतिशय बीक लागे । अने भरतजी ज्यारे मृगना देहनो त्याग करीने ब्राह्मणना घेर अवतर्या, त्यारे भगवान विना बीजे ठेकाणे हेत थई जाय तेनी बीके करीने संसारना व्यवहारमां चित्त दीधुंज नहीं । ते जाणीने गांडानी पेठे वर्त्या अने जे प्रकारे भगवानमां अखंड वृत्ति रहे तेमज रहेता हवा । (व.ग. अन्त्य. १७) इसलिये भक्तों । हमें जगत के व्यवहार में रहकर भी श्रीहरि की वात का विशेष चिन्तन करते रहना चाहिए, जिससे अपना कल्याण न बिगड़े । चाहे जैसी भी परिस्थिति आवे सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का ध्यान भजन-कीर्तन अहर्निश करते रहना चाहिए । जगत का व्यवहार गृहस्थाश्रम में अवश्य करना चाहिए । उस में भी आसक्ति मोह नहीं रखना, स्थित प्रज्ञ रहना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

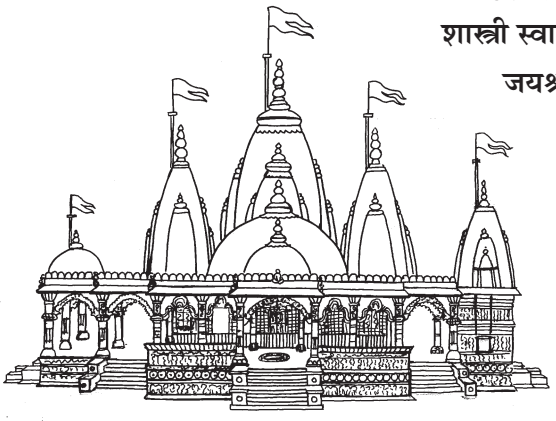

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१६)

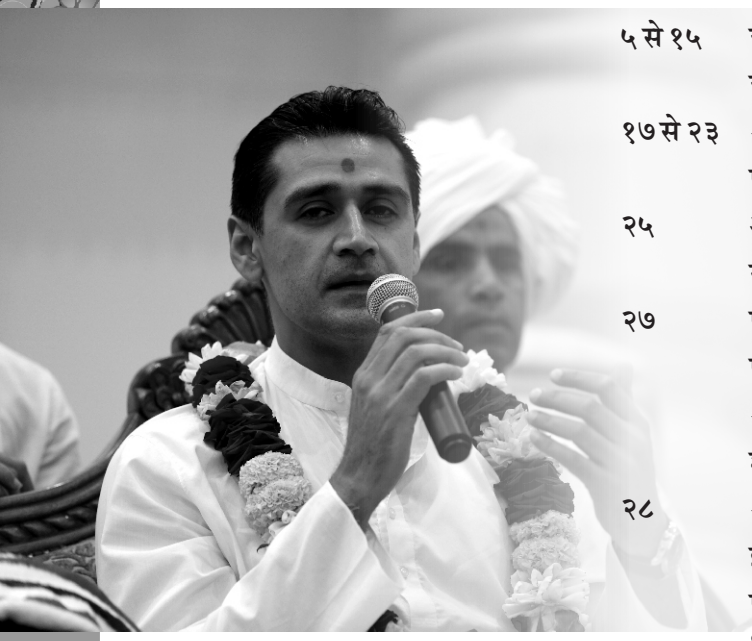

५ से १५	नाईरोबी (केनिया) कच्छ सत्संग स्वामिनारायण नूतन मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१७ से २३	श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन (अमेरिका) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२५	अमदावाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत महादिक्षा अपने वरद हाथों से किये ।
२७	प.भ. जिज्ञेशभाई गोविंदभाई पटेल के यहाँ पदार्पण श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा - थलतेज । ज्ञानसत्र की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
२८	श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) झूले पर प्रभु के दर्शन हेतु तथा हिमालय दर्शन की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
३१	विदेश धर्मयात्रा

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१६)

१० से १४	नाईरोबी (केनिया) कच्छ सत्संग नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२५	श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली जन्माष्टमी के उत्सव प्रसंग पर पदार्पण । रात्रि में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रसंग पर आयोजित कीर्तन संध्या तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती उतारने पधारे ।
२८	डांगरवा गाँव में सत्संग युवा शिबिर अपने अध्यक्ष स्थान पर संपन्न किये ।

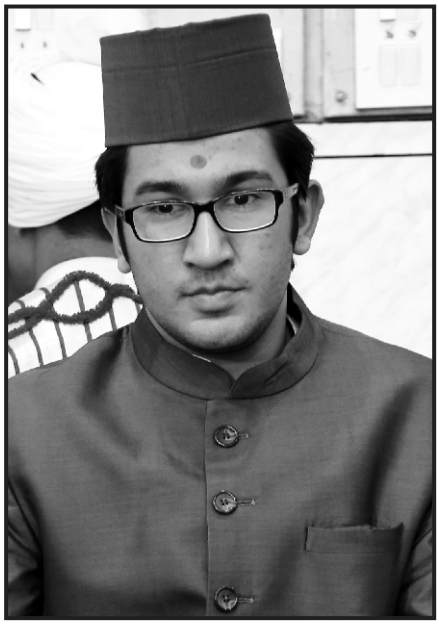

हरिमंदिर की सेवा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवान श्री सहजानंद स्वामीने शिक्षापत्री के श्लोक नं. १२१ में आत्यंतिक मुक्ति का अर्थ समझाते हुये लिखा है कि ''सेवा ही मुक्ति'' भक्तिमार्ग में भक्त को भगवान की प्रसन्नता के रुप में सर्व प्रथम सेवा का योग बाद में सत्संग की सेवा का योग अंत में अपने स्वरुप की सेवा का योग देते हैं । प्रभु की सेवा मिलना ही मुक्ति मानकर सेवा करे तो भगवान ऐसे भक्त को अक्षरधाम में अखंड अपनी सेवा में रखते हैं। इसलिये अपने संप्रदाय में भगवान के स्वरुप की सेवा के अभ्यास के लिये शिखरी मंदिर, हरि मंदिर, नित्य पूजा, तथा मानसी पूजा इस तरह की पांच प्रकार से अपने इष्टदेव की पूजा की जाती है। सेवा के निमित्त से भगवान के पास में रहना ही उपासना है ।इस प्रकार की सेवा से सभी प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं । इसके अलांवा अपने इष्टदेव की प्रसन्नता से मुक्ति मिलती है। कल्याण तथा मुक्ति में अन्तर है। कल्याण के अनंत भेद कहे हैं, लेकिन मुक्ति का कोई भेद नहीं कहे। श्रीमद् भागवत महापुराण के नव स्कन्धमें भगवाने नारद से कहा कि मैं स्वतंत्र होते हुये भी प्रेमलक्षणा भक्तिवाले भक्त के आधीन हूँ। भक्त जब जगावे तब जागता हूँ, जब शयन करावे तब सोता हूँ, जब भोजन करावे तब भोजन करता हूँ, जो पदार्थ अर्पण करे उसे ग्रहण करता हूँ। ऐसे निर्गुण भक्त के समीप में सदा रहता हूँ।

पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक विट्ठलनाथजी द्वारा कही गई सेवा रीति ''जो देह को वही देव को'' इसके अनुसार ठाकुरजी की प्रगट भाव से सांगो पांग सेवा के पादार्थो में प्रेमरुपी भाव मिलाकर प्रभु को अर्पण करना चाहिये ऐसी परंपरा श्रीहरिने प्रवर्तित किया है।

ऊपर बताये हुये पांच प्रकार सेवा भाव को ध्यान में रखकर बड़े संत तथा हरिभक्तों द्वारा प्रामाणित परंपरा सर्वमान्य सरल सेवा विधिका निरुपण करता हूँ। अपने संप्रदाय के उत्तर-दक्षिण विभाग के दोनो गादीस्थान के बड़े-छोटे मंदिरो की संख्या १०५०० जितनी है। इसमें भी उत्तर देश विभाग श्री नरनारायणदेव की गादी में प्रतिवर्ष २० मंदिर जितने वृद्धि हो रही है । उन सभी मंदिरो में सेवा करने वाले पुजारियों को बड़ा भाग्यशाली समझना चाहिये । जिन के हाथकी सेवा परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान स्वयं प्रगट होकर स्वीकार करते हैं। उन पूजारियों को व्यवहार में भले सामान्य हो लेकिन पदमपद के अधिकारी समझना चाहिये। क्योंकि कोठारी-ट्रस्टी का चयन गांव के लोग करते हैं। परंतु पुजारी की पसंदगी स्वयं श्रीहरि करते हैं । जिन्हे पूजा करने का मन में विचार आवे समझना चाहिये कि श्रीहरि हमारे अपर प्रसन्न हो गये हैं। इसके अलांवा पूजा न करने का विचार आवे तो समझना चाहिये कि भगवान मेरे ऊपर प्रसन्न नहीं हैं। भगवान मेरे हाथ की सेवा स्वीकार नहीं करना चाहते। उस समय प्रार्थना करनी चाहिये क्षमा याचना करनी चाहिए, इसलिये कि ऐसा योग पुनः नहीं मिलेगा।

सेवा विधिप्रातः ब्रह्ममुहूर्त में ऊठकर स्नानादि विधिपूर्ण करके मंदिर में जाकर मूर्ति को घंटी बजाकर जगाना चाहिए । इसके बाद प्रभु के सामने लोटा का पानी दातुअन, स्नान जल, वस्त्र, अलंकार, पुष्पमाला चंदन, इत्यादि का मानसिक संकल्प करके शुद्ध वस्त्र से मूर्ति को पोछना चाहिये । उस समय जो आता हो वह गीत, भजन, मंत्र बोलते रहना चाहिये । इसके बाद नैवेद्य का भोग लगाकर जल अर्पण करना चाहिये । पुष्पमाला-तुलसी पत्र प्रभु को अर्पण करना चाहिये । अगरबत्ती जलाकर आरती करनी चाहिये ।

बाद में प्रार्थना-विश्वेश छो सकल विश्वतणा विधाता, इसको गाते हुये साष्टांग दंडवत प्रणाम करना चाहिये । बाद में हाथ जोड़कर - जन्मया कौशल देश बटुक के अष्टक, चार परिक्रमा, यथाशक्ति स्वामिनारायण की धुन करनी चाहिये । इसके बाद, हरिभक्त अपनी श्रद्धा के अनुसार मूर्ति के सामने संप्रदाय के मूल शास्त्र का वांचन करना चाहिये ।

इसके बाद मध्यान्ह में यथा शक्ति भोग बनाकर भगवान को अर्पण करना चाहिये । उस समय ''जमो थाल जीवन जाऊँ वारी'' इस पद को बोलना चाहिये । इसके बाद परदा लागकर भगवान को सुला देना चाहिये । चार बजे के आसपास घंटी बजाकर भगवान को जगाना चाहिये । प्रार्थना करते हुये शुद्ध वस्त्र से मुखारविंद को पोंछना चाहिये । यथा शक्ति कल-जल अर्पित करके परदा हटाना चाहिये ।

इसके बाद सन्ध्या कालीन आरती में घी का दीपक जलाकर करना चाहिये । हनुमानजी को तेलका गणपतिजी को घी का दीपक जलाना चाहिये । अगरबत्ती जलाकर तीन बत्तीवाला दीपक तैयार करके - जय सद्गुरु स्वामी... इत्यादि पर बोलते हुये आरती करे । ॐ के आकार का चरण, उदर, छाती, हाथ, मुखारविन्द, इत्यादि पर सात-सात बार आरती फेरकर शंख से प्रदक्षिणा करके हरिभक्तों के ऊपर जल प्रक्षेप करना चाहिये । इसके बाद संध्याबंदन, रामकृष्णगोविन्द अष्टक, नवीनजी मूत, निर्विकल्प, विश्वे छो, जन्म्या कौशल, प्रार्थना गान करना चाहिये । भगवान के नाम का जय जयकार उच्चस्वर से करना चाहिये । इसके बाद सायंकाल की थाल-जल प्रभु के समक्ष रखे । उस समय परदाबन्द रखना । इसके बाद समूह शास्त्र वांचन करना कीर्तन-धुन-यदि श्रद्धा होतो पोढणीयुं बोलना । सुख शैया पर सोने का संकल्प करना । उस समय पुजारी भगवान के समक्ष लोटा में पानी ढंककर रखे और प्रार्थना करे कि रात्रि में जलपीने की इच्छा हो तो जलपान कीजियेगा । इस तरह संकल्प करके परदा लगाकर लाइट बंद करे, उसके बाद किसी प्रकार की ग्रामवार्ता-आवाज न करे ।

इसी तरह प्रसंगानुसार जो भी उत्सव आयें - एकादशी रामनवमी, जन्माष्टमी, झूलोत्सव, अन्नकूट, पाटोत्सव, इत्यादि प्रसंग को यथाशक्ति मनाना । धनुर्मास के समय प्रातः काल जल्दी उठकर भगवान को उत्तम नैवेद्य रखकर पुस्तक रखना तथा स्वामिनारायण मंत्र की धुन करे ।

जिस भक्त के घर का भोजन भगवान ग्रहण करते हैं, उस मनुष्य के घर का प्रारब्धबदल जाता है । जिसने ठाकुरजी की सेवा का व्रत लिया है जब तक वह पूजा में रहे तबतक सूतक नहीं लगता । स्नान मात्र से पवित्र होता है । यह नियम अखंड व्रत लेने वाले को लागु पडेगा ।

भगवान का पानी छान कर अलग रखना चाहिये । भगवान के बर्तन साफ होने चाहिये । सिंहासन पर अन्य कोई वस्तु नहीं होनी चाहिये । बनावटी हार भगवान को नहीं पहनाना । उत्सव - विजया दशमी को ध्वजा चढानी चाहिये । ठाकुरजी के सन्मुख बैठकर शास्त्र सुनाना चाहिये । जिस गाँव में मंदिर हो वहाँ दर्शन करने जाना चाहिये । यदि दर्शन के लिये नहीं जाते तो श्रीमद् भागवत के अनुसार देवापराधका दोष लगता है । मंदिर में या मंदिर के बाहर ग्राम्यवार्ता नहीं करनी चाहिये ।

"ये तो मुल्क के बादशाह है ।"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

श्रीहरि के ज्ञान की वार्ता अनोखी है । ज्ञानप्रदान करने की परंपरा क्रमशा बढती है, जिस से लोगो को हृदय में उत्तर जाती है । संवत १८७७ मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को श्रीहरि लोया गाँव में सुरा खाचर के दरबार में सभा करके विराजमान थे । भगवान स्वयं बोलते हैं कि ''जओं ने भगवाननी मायानुं बल केवुं छे जेने करीने विपरीतपणुं घणुं थाय छे, केम जे सारो जणातो होय ने पछी अतिशे भूंडो थई जाय छे ।'' इतना कहकर संतो से कहते हैं कि आपलोग प्रश्न पूछियें और बात करते हैं ।

नित्यानंद स्वामी के वचनानुसार कि हे महारा ज! कुछ लोग ऐसे होतैं हं कि पहले प्रशंसा करते हैं बाद में निंदा करते हैं । ऐसी कौन सी उपाय है कि देश, काल, क्रिया, संत, विषम स्थिति में भी अच्छा का अच्छा ही रहे ।

महाराज इस विषय पर प्रकाश डालते हुये कहते हैं कि - (१) देहाभिमान हो, (२) दृढ आत्म निष्ठा हो (३) पांच प्रकार के विषयो में वैराग्य हो, (४) भगवान का माहात्म्य के साथ यथार्थ निश्चय हो । ए चार प्रकार के तत्व जिसके जीवन में हो उसे किसी भी परिस्थिति में देश कालादिक विषयमपना होने पर भी विपरीत मति नहीं होती ।

जिस में देहाभिमानी पोना हो तो संतो के खंडन करने के बाद भी बड़े संतो में दो, देखने लगता है, इतना ही नहीं बगवान में भी अभाव दिखाई देता है । देहाभिमानी तो सर्प की तार की तरह होता है । दूधमें एक बूंद भी सर्प की लार गिर जाय तो ले लटीक जीने वाले की मृत्यु तो अवश्य होगी । इसी तरह संत में दोष देखने वाला देहाभिमानी निश्चिय पतीत होगा ।

इसलिये देहाभिमान का परित्याग करना चाहिए । इसके अलांवा आत्मनिष्ठा को दृढ करना चाहिये । तीसरा परमेश्वर का माहात्म्य जैसा है वैसा ही समझे । उनका माहात्म्य क्या है ?

तो जो भगवान की भंय से इन्द्र बरसता है, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा प्रकाश करते हैं । पृथ्वी सभी को धारण करती है । समुद्र अपनी मर्यादा का लोप नहीं करता । औषधिमां ऋतु को प्राप्त करके फलीभूत होती हैं । तो भगवान जगत की उत्पति स्थिति लय कते हैं । जिस की शक्ति काल है, माया है, पुरुष है, अक्षर हैं । इसी तरह भगवान के महत्व को समझता हो उसे इस जगत में ऐसा कौन पदार्थ है जी बन्धन करेगा । वह काम, क्रोध, लोभ, मान, ईर्ष्या, स्वाद, सूक्ष्मवस्त्र धन, स्त्री, तथा जो जो विषय संबन्धी पदार्थ वह उसे बन्धन कारक नहीं होंगे । कारण यह कि उसने सबी को आत्मसात कर लिया है ।

भगवान ऐसे तथा भगवान की भजन-भक्ति, स्मरण, कथा भी वैसी ही है । अक्षर भी वैसा है, अक्षर संबन्धी सुख भी वैसा ही है । ब्रह्मलोक संबन्धी सुख भी वैसा है, स्वर्ग सुख भी वैसा ही है । इस तरह सबी सुखों का अनुमान करके तथा भगवान के सुख को सबसे अधिक मानकर भगवान में अपने को लगाया हो, उसे संसार में कौन सा ऐसा पदार्थ है जो उसे नीचे गिरा दे । उसे कोई गिरा नहीं सकता । जिस तरह पारसमणी किसी लोहे से मिलती है तो वह लोहा सोना हो जाता है, लेकिन बाद में वह सोना पारसमणी के चाहने पर भी लोहा नहीं होता । इस तरह का जो भगवान के माहात्म्य को जानता है वह भगवान के चरणारविंद से कभी नहीं गिरता । तो क्या दूसरे पदार्थ से वह गिर सकता है क्या ? कभी नहीं ।

भगवान का इस तरह जो यथार्थ माहात्म्य समझता हो तथा भगवान की भजन-भक्ति करता हो निश्चित ही वह उपासक है । यहाँ पर भगवान ने उद्धवजी का उदाहरम देते हैं । गये थे गोपियों को ज्ञान देने, लेनि गोपियों की भगवान में इतनी अधिक प्रीति थी कि, उस प्रीति के वश होकर वृन्दावन

में लता-गुल्म होने की भगवान से प्रार्थना किये।

(ब्रह्मानंद स्वामी भी जब लाडूदान गढवी थे उस समय श्रीजी महाराज के कहने से लक्ष्मी स्वरुपा तथा राधा स्वरुपा लाडूबा तथा जीवुबा को उपदेश देने आये लेकिन दोनो बहनो ने कहा कि हे लाडूदान ? आज आप-हम सभी इस संसार में आने-जाने चक्र में फंसे रहे जब कि साक्षात् परमात्मा समक्ष हैं तो मोक्ष की इच्छा क्यों न करें संसार के विषय की वात क्यों करे । यह सुनते ही लाडूदान भगवान के पास जाकर कहने लगे कि हे महाराज ! अब आप हमें अपना बना लीजिये।

इस तरह जिन्होंने परमात्मा का माहात्म्य समझा है वह निर्मानी संत का भी दासानुदास बन कर रहेगा। ऐसे संत तो चाबुक से प्रहार करें तो उसे सहन कर लेना चाहिये अन्यथा बेटों का तिरस्कार सहन करने की तैयारी रखनी चाहिये। इन संतो के साथ रहने का जो योग हुआ है वह मेरी भाग्य से हुआ है ।

इस तरह जिन्हें भगवान का तथा भगवान के संत का माहात्म्य समझ आ गया है उन्हें भगवान का या भगवान के संत का दोष दर्शन नहीं होता।

भगवान कथा के अन्त में एक सुंदर उदाहरण देते ''जेम मुंबईनी गवर्नर साहेबा खुरशी नाखी ने बैठो होय ने तेनी सबामां कोई गरीब माणस जाय ने तेने खुरशी न नाखी देने आदर न करे त्यारे कांई एने ते अंग्रेज ऊपर धोखो थाय छे ? ने कांई गाल दीधानुं मन थाय छे ? लेश मात्र थतुं नथी। शा माटे जे एणे अंग्रेजनी मोटाई जीणी छे जे ''ए तो मुलकनो बादशाह छे ने हुं तो रुंगाल छुं.'' ऐसा जानने के बाद कभी धोखा नहीं होता श्रीहरि परमात्मा तो अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हैं। ऐसे भगवान के साक्षात् उपासक संत भी जिस तरह किसी गुल्फ का राजा हो ऐसे बड़े हैं । कारण कि जितना राजा का राज्य होता है, उतना उनकी रानी का भी राज्य होता है । परमात्मा तथा संतो का माहात्म्य जानकर उनके सामने देहाभिमान करके उनके ऊपर शंका करके, उनके भीतर दोष देखने से सत्संगमें पडना संभव हो जाता है।

केवल देहाभिमान दूर करके, आत्मनि,ठ होकर, जैसे बने वैसे भगवान का यथार्थ माहात्म्य जानकर दृढ निश्चय करके, श्रीहरि का आश्रय रखकर स्वयं को शरणागत होने में ही आनंद है।

यह सत्यवाद है कि अपने मुलक के बादशाह के माहात्म्य को जानने के बाद अपने अंतर से कंगाल पना नही रहना चाहिये । जब हमे स्वयं ईश्वराधिपति भगवान स्वामिनारायण मिले हैं तो अपने मन में दीन हीन भावना का परित्याग करके आत्यनिवेदी होकर सुख की शीतल छाया में सदा आनंद में रहना चाहिये।

समस्त सत्संग को सूचना

समस्त हरिभक्तों को सूचित किया जाता है कि आप किसी भी शिखरी मंदिर में वस्तु, पदार्थ, नगद, या कोई भी भेंट दें तो उसकी पक्की रसीद अवश्य प्राप्त करलें। रसीद के विना भेंट देना श्रीजी महाराज की आज्ञा के विरुद्ध है। इससे दोष में पडने की संभावना होती है। इसलिये कहीं - किसी मंदिर में या किसी संस्था में जो भी भेंट दे उसकी पक्की रसीद लेने का आग्रह रखें। यह सभी हरिभक्तों को विशेष सूचना।

श्री स्वामिनारायण अंक के सदस्यो को सूचना

आपना श्री स्वामिनारायण मासिक प्रत्येक महीने की ११ तारीख को नियमित पोस्ट द्वारा प्रेषित किया जाता है। फिर भी किसी सदस्य को अंक न मिले तो २० ता. के बाद मो. नं. ९०९९०९८९६९ नंबर पर सूचना दें। स्टोक में कोपी होगी तो पोस्ट द्वारा पुनः प्रेषित की जायेगी । वारंवार अंक न मिलता हो तो अपने स्थानिकपोस्ट में लिखकर फरियाद करें। कितने लोगों के अंक पोस्ट में से वापस आजाते है। दो बार पावस आने पर अंक प्रेषित नहीं किया जाता है। जिसकी सभी को जानकारी होनी चाहिए।

श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर महोत्सव लंगाटा - नाईरोबी

- प्रफुल खरसाणी

हवा, पानी तथा खोराक मनुष्य की मूल आवश्यकता है । कालक्रम से वह बदल गया और रोटी, कपडा, मकान मूल आवश्यक हो गया । अपने सत्संगियो में एक अधिक आवश्यकता बढ गई है वह मंदिर है - श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रित विश्व के किसी कोने में रहे उन्हें देव दर्शन नित्य चाहिए । १९०० से १९४० तक दुकाल से प्रभावित कच्छ के हरिभक्त रोटी, कपडा का पर्याय खोजते हुए सुखडी मात्र का भोजन साथ लेकर पानी की जहाज से अफ्रिका खंड में गये । वहाँ के केन्या में १९५४ में श्री कच्छ सत्संग श्री स्वामिनारायण मंदिर की स्थापना हुई । मूर्ति भुज से लाई गई थी । हरि भक्त नियमित मंदिर में आकर सत्संग करने लगे । थोड़े समय में जगह कम पड़ने से १९५६ में बगल में दूसरा प्लाट लेकर मंदिर का विस्तार किया गया । वहाँ मजदूरी करने के लिये जो हरिभक्त गये थे उनकी दिन प्रतिदिन आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति के साथ सत्संग की भी प्रगति हुई । २००४ में लंगारे में ४-५ एकड़ भूमि दान मिली जिससे नया मंदिर बनाने का संकल्प सभी के मन में हुआ तथा भूमिदाताओ की संख्या में भी बढत हो गई । २०१५ में १०-५ एकड जमीन में आफ्रिका खंड का सबसे विशाल मंदिर का भूमिपूजन किया गया । दान का अविरत प्रवाह बहने लगा । इससे प्रेरित होकर भूतो न भविष्यति इस तरह का प्रयत्न होने लगा । १९७० में प.पू. बड़े महाराजश्री प्रथम मुलाकात से यदा कदा बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री आफ्रिका आकर सत्संग का पोषण करते रहे । सवादो सौ वर्ष पूर्व की रामनवमी के दिन रात्रि में बाल घनश्याम महाराज का प्रथम रोने की आवाज सुनने की कल्पना कितनी रोमांचक होगी । उसी आवाज में देश-विदेश के भव्य मंदिरो को पूर्व भूमिका निर्मित

हुई होगी ।

ता. १०-२-१३ को भव्य मंदिर निर्माण के दृढ संकल्प के साथ खात मुहूर्त की विधिकी गई थी । मंदिर के प्रांगण में हरिभक्तों के लिये उत्तम व्यवस्था की गई थी । जिससे लंगारा की विशाल जगह कच्छ का रुप ले लिया था । दो वर्ष पूर्व से मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में समानोपयोगी कार्यक्रम किया गया था । भारत से चार हजार टन बंसी पहडा का पत्थर १५० कन्टेनर द्वारा आफ्रिका ले जाया गया । २०१३ में मंदिर निर्माण का कार्य श्री गणेश किया गया । ६०० स्थानिक तथा ४०० भारतीय शिल्प कारीगरों के अथक परिश्रम से तीन वर्ष में मंदिर तैयार हो सका तथा उसमें भगवान की प्रतिष्ठा ता. ५-८-१६ से ता. १३-८-१६ तक की गई । दो तीन महीने पूर्व से अपने भाग में आनेवाली सेवा सभी छोटे-बडे स्त्री-पुरुषोंनी की । देश-विदेश में आमंत्रण पत्रिका भेंज दी गई, सभी लोग अफ्रिका के लंगाटा में आने लगे ।

अमदावाद से श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के साथ सम्पूर्ण धर्मकुल उत्सव में आया था । उस में भी बड़ी गादीवालाजी तथा पू. गादीवालाजीने भी बहनों की सभा में सभी बहनों को आशीर्वाद दी थी । अहमदावाद तथा भुज से करीब २०० संत पधारे थे। ता. ७-८-१६ को शुभ मुहुर्त में नूतन मंदिर में धूमधाम के साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों मूर्ति प्रतिष्ठा की गई थी । भुज के

संतो द्वारा सत्संगिजीवन की कथा की गई थी । मंदिर के प्रांगण में सत्संग की रीति के अनुसार वेश-भूषा दिखाई देता था । कथा मंदिर में ही रखी गई थी । गर्भगृह भी विशाल था । व्यास के दाहिनी तरफ प.पू. बड़े महाराजश्री, आचार्य महाराजश्री, लालजी महाराजश्री बैठे थे । बगल में स.गु. महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी, पुराणी प्रेमप्रकाशदासजी, स.गु. सनातन स्वामी, केशवप्रसाद स्वामी, पार्षद जादवजी भगत, सभा संचालक शा.स्वा. अक्षरप्रकाशदासजी अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी तथा अन्य संत बैठे थे । अपने श्री स्वामिनारायण म्युजियम के इकोफ्रेडली अभिगम से प्रेरित होकर मंदिर में प्रकाश की व्यवस्था की गई थी । प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग करके सोलार का भी प्रयोग किया जा रहा है . भुज के महंत स्वामी तथा अन्य संतो की प्रेरणा से हरिभक्त कोई कमी नही होने दे रहे थे । इसलिये भारत से आने वाले सभी के लिये एरपोर्ट से लेजाना-लाना-आवास-भोजनादिक सभी व्यवस्था सुचार रुप से सम्पन्न की जा रही थी । करीब १००० जितने लोगो के भोजन की व्यवस्था की गई थी । वेदों की पूजा, कथा पारायण, यज्ञ के साथ ही प्रतिदिन विद्वान संतो द्वारा प्रवचन किया जाता था । रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया जाता था । शाकोत्सव का भी आयोजन किया गया था । श्री राजा ने भी अपने हाथ से सर्व प्रथम १२ रोटी बनाई । करीब ५ कि.मी. लंबी शोभायात्रा में २५ से ३० फ्लोट, २५ जितने बेन्ड, युवकों द्वारा गुजरात की परंपरा गरबा इसी तरह अनेक कार्यक्रम किये गये थे । संत-हरिभक्तों द्वारा समूह में आरती की गई थी । इस प्रसंग पर तीन अपर स्वरुपों द्वारा आशीर्वचन का लाभ हरिभक्तों को मिला था । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा संतो की प्रसंशा की थी । प्रसंगोचित प्रवचन करके सभी को श्री नरनारायण का दृढ आश्रय रखने की सलाह दी थी ।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने बताया कि हम सभी लोग श्री नरनारायणदेव गादी के है । अलग-अलग की पहचान छोड़कर एक साथ मिलकर दिव्य सत्संग को आगे लेजाने का उत्तरदायित्व अपना है ।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने भी बड़ा सुन्दर प्रवचन करके युवकों के मन को जीत लिया था ।

यद्यपि पूरा केन्या श्री स्वामिनारायण के नाम से प्रभावित है तथापि आते जाते अपने हरिभक्तों को वहाँ के स्थानिक लोग अपनी शैली में जय श्री स्वामिनारायण कहते, यह सुनकर उत्सव की सार्थकता समझ में आती थी ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुखकी अमृतवाणी

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)

ब्राह्मण भोजन के प्रसंग पर, कांकरिया मंदिर ता. १३-३-२०१६ : महाराज ने फाल्गुन शुक्ल तृतीया को श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा की थी, उस दिन उत्सव नहीं हो सकता था। महाराजने विचार किया कि देव की प्रतिष्ठा तो कर दिये अब क्या करें ? अब सभी को प्रसन्न करने के लिये लड्डू खिलाने की व्यवस्था करते हैं। इसलिये उस उत्सव के भागरुप में ही फाल्गुन शुक्ल पंचमी के दिन महाराजने कांकरिया के किनारे ब्राह्मणो को भोज दिया था। यह कोई स्वतंत्र उत्सव नहीं है। परंतु नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये थे उसी के उपलक्ष्य में ब्राह्मण भोजन करवाये थे। ब्राह्मणों को भोज दिये ऐसा कहते हैं, यद्यपि यह भोज प्रतिष्ठा से संबधित था। भोजन केवल ब्राह्मणो को ही नहीं करवाये बल्कि ब्राह्मणेतर सभी वर्ग के लोग जो भी आये सत्संगी या अन्य सभी को भोजन कराया गया।

आज हम लोग इस उत्सव में वही रुप देखते हैं। कहते हैं ब्रह्म भोज लेकिन ब्राह्मणों की अपेक्षा अन्यों की संख्या अधिकर रहती है। इसका कारण यह है कि ब्राह्मणो को कहाँ खोजने जाये, हाथ पकड़कर ले आयें तो भी मेल नहीं पडता। महाराजने ब्राह्मणो को यदा कदा भोजन कराकर खूब लड्डू खिलाया है। उस में एकबार सलकी गाँव में महाराजने ब्राह्मणो के लिये लड्डू बनवाया, लेकिन ब्राह्मणो ने कहा कि हम नहीं खायेंगे। ईर्ष्या, झगडा, रिसाना इत्यादि क्या आज नहीं होता ? महाराजने कहा कि ऐसा करते हैं कि अगल बगल के जो भी लोग रहते हैं उन्हीं को भोजन करा देते हैं। वे लोग कहते कि महाराज हम ब्राह्मण नहीं है। महाराजने कहा कि, आप लोग हां करो तो आप लोगो को ब्राह्मण बनादें। वे लोग महाराज का वचन मान गये और महाराजने उन्हें यज्ञोपवीत पहना दिया, उन्हें ब्राह्मण बनाकर लड्डू खिलाये। इसका मतलब यह कि जाति पांति की अपेक्षा उचित यह है कि महाराज के वचन में महाराज की आज्ञा में रहे तो महाराज को अच्छा लगता है। हरिभगत ही हमारी जाति के हैं। जातिपाति चाहे जो भी हो संतोने हम सभी के लिये लड्डू बनवाया है। इसलिये प्रेम से भोजन कीजियेगा। लेकिन थोडा थोडा भोजन किजियेगा। जिन्हे डायाबिडीस हो उनकी समस्या तो है ही। हमें लंबे मुसाफरी में भूख लगी, वनराज भगत से कहा कि कुछ है ? भगत ने कहा, सारा है। लाओ, खायेंगे। साथ में एक डायाबिटीसवाला हरिभगत भी था। वह सामने देखता ही रह गया। भगत से कहा कि इन्हे भी दो। नहीं पचेगा नहीं (हंसी में) अपने अमदावाद मंदिर की वात करें तो उसमे जो नक्काशी का काम है उसे देखने के लिये दूर दूर से लोग आते है, उसमें भी जब वे सभा मंडप की चित्र कला देखते है तो उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है, यद्यपि कोई सभा मंडप के ऊपर नहीं जाता, वहाँ पर जो नक्काशी का काम हुआ है, सुग्गा, मोट इत्यादि की वह दर्शनीय है। सभा मंडप के आगे जो स्तंभ है उसको देखने से किसी विशेष इतिहास की सूचना मिलती है।

केवल मंदिर या आध्यात्मिक नहीं परंतु राष्ट्रिय इतिहास भी इस में समाया हुआ है। प्रत्येक जगह पर वेन्टीलेशन हवा, प्रकास का कितना विचार किया गया है। उस समय साधन तथा टेकनोलोजी की इतनी व्यवस्था नहीं थी, बैल गाडी में बड़े-बड़े पत्थर भरकर लाये जाते थे। राधाकृष्ण देव के सामने के प्रसादी के पत्थरों का इतिहास सभी लोग जानते हैं। उसी समय आनंदानंद स्वामी ने इस मंदिर को केवल १ वर्ष में पूरा करा दिये। इतना ही नहीं इसमें कितना सूक्ष्मकाम, ऐसा मंदिर आज बनाना हो तो १० वर्ष लगेगा। इतना ही नहीं महाराज मात्र सात वर्ष के भीतर नव-नव मंदिरों का निर्माण कार्य करवाकर अपने स्वरूप को प्रतिष्ठित करवाये। आज भी हम मंदिर बनवाते हैं, किसी

जगह पर ट्यूब लाईट लगाना रह गया हो तो २० वर्ष के बार देखेंगे तो वही काम तब भी बाकी होगा । कहने का मतलब यह कि नंद संतो को मंदिर के प्रति, सत्संग के प्रति कितना अपनापन था । मंदिर का कोई भी भाग हो ऐसा कभी विचार नहीं किया कि इसे कौन देखने वाला है ।

महाराजने प्रथम अहमदाबाद मंदिर का निर्माण कार्य करवाया । इसके बाद हम एक गाँव से एक-एक बडे भक्त आये । उदाहरण के रुप में मुलीपुर से राजा रामाभाई आये, भुजनगर से गंगारामभाई इत्यादि भक्त आकर महाराज से कहने लगे कि - हे महाराज ! हमारे गाँव में भी सुंदर मंदिर का निर्माण करवाईये । महारजने हां कह दिया । नंद संतो को भेंजे । आज हमारे पास आकर किसी गाँव से हरिभक्त कहे कि महाराजश्री हमारे गाँव मे मंदिर बनवाइये तो हम बहुत विचार करते हैं । नव मंदिरों का निरमाण हुआ जिस में अहमदावाद मंदिर की विशेषता यह है कि इस मंदिर के निर्माणार्थ कोई भक्तने प्रार्थना नहीं की । इस मंदिर के निर्माण के लिये स्वयं महाराजने विचार किया उसी विचार से प्रेरित होकर अंग्रेजो ने मंदिर के लिये जमीन दी है । महाराजने मंदिरो को बनवाया उसके बाद आज हमारे पास हजारों मंदिर हैं । महाराज के शब्द है कि ''हमारे में तथा श्री नरनारायणदेव में रतिमात्र फर्क नहीं है । हम वारंवार इस श्रीमुख वचन को सभा में सुनाते रहते हैं । हम जब छोटे थे तब इस कांकरिया मंदिर में आते उस समय यहाँ विशेष कुछ नहीं था । परंतु हनुमानजीने तथा संतोने इस भूमि की रक्षा की । हनुमानजी की भक्ति तथा सेवा निष्काम है । हनुमानजी के पास हम सभी को निष्काम भक्ति सीखनी चाहिये । सत्संग में नये हो तब महाराज से या हनुमानजी से मांगे और महाराज हम सभी को दृढता प्रदान करें । बालक छोटा हो तब पिताकी अंगुली पकडकर चलता है । वस्तु मांगे तो पिता उसे लाकर देते हैं, बाद में वही बालक जब युवक हो जाता है तब अपने पिता से मांग-मांग करे तो कैसा लगेगा । इसी तरह हम भी सत्संग में पुराने हो गये है इसलिये निष्काम भक्ति को दृढ करके सत्संग की सेवा करें तभी अच्छे लगेगे । ता. १२-३-१६ को प.पू. बड़े महाराजश्रीने हनुमानजी की बात करते हुये कहा कि अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने अमदावाद में जहाँ-जहाँ हनुमानजी की प्रतिष्ठा की वहाँ हनुमानजी भगवान को लेकर आये । कारण कि हनुमानजी को भगवान के विना चलता नहीं है । नारायणपुरा, नारायणघाट, कांकरिया इन मंदिरो में तथा असारवा गुरुकुल इत्यादि स्थलों पर इस समय कांकरिया का विस्तार खूब फैल गया है, इस लिये सत्संग को भी खूब ऊर्ध्वगामी बनाना है । कारण यह कि - अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के नाम से यदि दूसरे लोग चर के खा रहे हैं तो वही भगवान हमे तो प्रत्यक्ष मिले हैं । कारण यह कि अपने मंदिरो में जो मूर्तियाँ है वे मूर्ति नही है बल्कि प्रत्यक्ष हैं । बैंक बेलेन्स से समृद्धि नहीं होती परंतु जिस के पास भगवान है वही समृद्ध है ।

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर के ११ वे पाटोत्सव प्रसंग पर ता. २६-३-१६ प.पू. महाराजश्री जब आशीर्वचन दे रहे थे उसी समय बहनो के विभाग में से जगह कम होने से कोलाहल हो रहा था । पुरुष हरिभक्त उन्हें शांत कर रहे थे । इसी विषय के ऊपर महाराजश्रीने आशीर्वचन प्रारंभ किया, भले करे, करने दो ? आवाज दो प्रकार की होती है, एक बाहर की दूसरी अन्दर की । अन्दर की आवाज जितनी पीडा देनेवाली होती है उतनी बाहर की आवाज तकलीफ नहीं देती । किसी विषय के मूल में जाने पर ख्याल आयेगा कि यह क्यों हो रहा है यह गहराई से विचार करने की जगह सीधा प्रत्यक्ष अभिप्राय दे देते हैं । अन्दर के कोलाहल को शांत करने के लिये कथा करनी पड़ती है । स्वभाव प्रकृति का जो दोष है वह कथा सुने विना टलता नहीं है । वचनामृत भाष्य, जीवन, भूषण, भागवत अथवा महाराजने जिसे मान्य किहा है ऐसे ग्रंथ की कथा होती हो वह सब दर्पण के समान है । वही दर्पण हम अपने सामन रखें तो अपने भीतर के दोष दिखाई देंगे । परंतु होता ऐसा नहीं हम अगल बगल की आवाज देखने में अपने दर्पण को उस आवाज में खो देते हैं । कभी कभी ऐसा भी होता है अपने बगल में ऐसा भी व्यक्ति आकर

बैठ जाता है जो अनुकुल नहीं होता । महाराज के सामने देखने की जगह हम उसी की तरफ देखने लगते है । कभी ऐसाभी होता है कि माला फेरते - फेरते अन्यत्र चले जाते हैं ।

निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि -

हरि हरखी सुख आये, तो बर्तीए वचन मांय ।
मेली गमतु मन तणुं रहीये श्याम गमते सदाय ॥

भगवान तो सदा रहनेवाले हैं । दूसरे का अस्तित्व रहने वाला नहीं है । सत्य तो यह है कि पूरी पृथ्वी स्मशान भूमि है । ऐसी कोई जगह नहीं है कि जहाँ कोई शरीर छोडा नहीं है । हमारी आचार्य पंरपरा में बापजी कईबार हमसे हमारे दादाजी पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराज की बात करते है तथा आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजकी के सामर्थ्य की बात तो हम लोग जातने हैं । इसमें सीखने लायक वात यह है कि श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित परंपरा में कितने सामर्थ्यवान हुये । आचार्य परंपरा के फोटो को मंदिर के सिवाय अन्यत्र देखने में न मिले तो यह समझना चाहिये कि फोटो में पडे विना दिल में स्थान हो ऐसा जीवन जीना चाहिये । इससे भी महत्व की वात तो यह है कि ये भगवान अपने हैं । ये मंदिर अपने हैं । इस तरह की जब आत्म भावना आयेगी तब अपने आप सेवा-भक्ति का भाव हो जायेगा । आपमें ऐसी भावना है तभी तो आप लोग सेवा किये हैं । अन्यथा मेहमान सभी वनना चाहते हैं । परंतु घर का मालिक बनना बड़ा कठिन है । संतोने बडा सरल सब कुछ कर दिया है । यह दरवाजा तो हमें सदा याद रहेगा । इस हाइवे के ऊपर से जबभी हम निलकते हैं तब-तब यह दरवाजा हम याद करते हैं । सभी यजमान आये लेकिन फटाका का यजमान कौन था हमें पता नहीं, वे यहाँ आये हम उन्हे स्पेशल हार पहनायेंगे । फटाका के धूंआ से हमें दो-तीन दिक तक शरदी बहती है । एलर्जी है । स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी सत्संग का कार्य तो करना है । हमें आना ही पड़ता है । प.पू. महाराजश्री दरवाजे का उद्घाटन करके मंदिरमें प्रवेश किये तब उनके नजदीक में ही फटाके की आतिशबाजी की जा रही थी । पू. महाराजश्री मुख पर रुमाल रखकर आगे चले थे । इस लिये आशीर्वचन में उदार दिल से अप्रसन्न होकर इस प्रकार के वचन ऊच्चारित किये थे । इस वात से पूरा सत्संग समाज इसे सीखे कि और प्रतिज्ञा करे कि उत्साह में आकर इस तरह जब कि कार्यक्रम महाराजश्री हो तब अतिरेक न करें । उनके स्वास्थ्य का ख्याल रखना हम सभी का कर्तव्य है । निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

उपाय एवो करवो नही, जेणे करी रजीवे जगदीश ।
राजी कर्यानु रहु परुं, पण हरिने न करावो रीश ॥

श्रीहरि के वचन अनुसार धर्मवंशी आचार्यश्री श्रीहरि के अपर स्वरुप है, इस लिये प्रत्येक जगह पर विवेक रखना चाहिये । आज ही हमें विदेश जाना है फिर भी जिस तरह आप लोगो को हम से मिलने की उत्कंठा होती है वैसे ही हमें भी आपलोगो से मिलने की उत्कंठा होती है । यदि ऐसे योग में मिलना न होतो आप लोगो के मन में ही नहीं बल्कि मेरे मन में भी ऐसा रहेगा कि इतना बड़ा उत्सव हुआ मिलना नहीं हो पाया ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा प्रस्तुत

नित्य कथा वार्ता

प्रतिदिन बैठे संतो द्वारा कथा का लाभ

॥कथा॥ GTPL चेलन नं. 555

समय
दोपहर में २-०० बजे से २-३०
सायंकाल ७-०० से ७-३०

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર
સેક્ટર ૨ ગાંધીનગર
ભવ્ય હિંડોળા દર્શન તથા હિમાલય દર્શન

ઝુલો નવલ પ્રીતમ હરિ
રસિયાજી ઝુલો રે

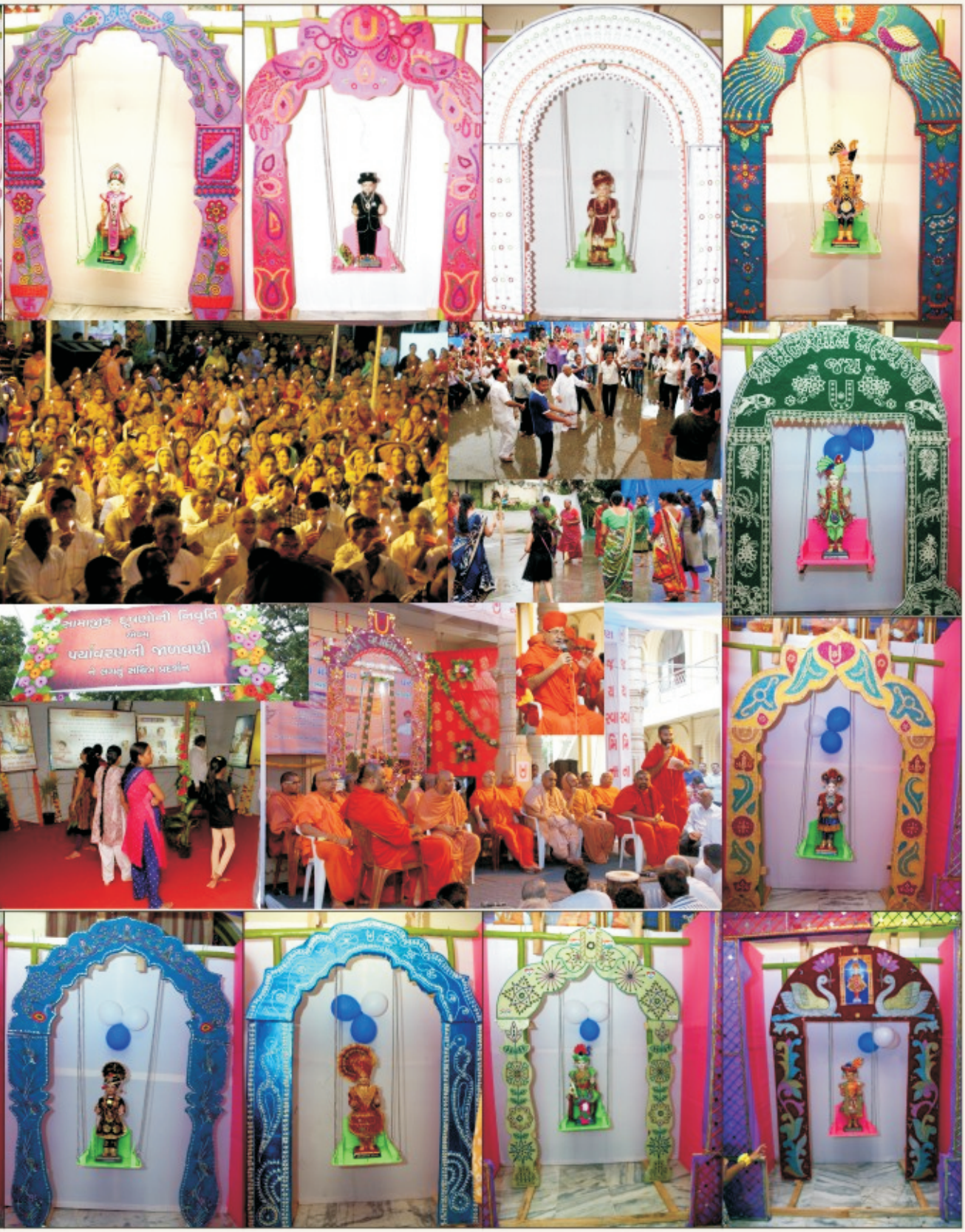
પર્યાવરણની જાળવણી

અન્ય મંદિરોમાં હિંડોળા દર્શન

વિહોકન - અમેરિકા

મહેસાણા

મથુરા

મોટેરા

કલોલ-શ્રીનગર

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

– प्रफुल खरसाणी

हम शबरी की आंख, नरसिंह महेता की करताल या मीरा जैसी चाहना लेकर प्रभु की प्रतीक्षा करेंगे तो वात विश्वास की होगी। लेकिन इसी विश्वास के साथ म्युजियम में आयेंगे तो निर्जीव लगने वाली प्रसादी की वस्तुयें दर्शन मात्र से श्रीजी महाराज के सांनिध्य प्राप्त करने की शांति अंतर में मिलेगी।

अभी वर्तमान में केन्या में नूतन मंदिर उद्घाटन प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वचन में एक दृष्टांत देते हुये कहा था कि ''एक बार विष्णु भगवान जगत के जीव मात्र को दान देने बैठे। दान देते-देते। एक वस्तु नीचे पड़ गई। विष्णु भगवानने उस वस्तु को अपने चरण के नीचे दबा लिया। प्रसंग पूर्ण होने के बाद लक्ष्मीजीने प्रभु से कहा कि हे प्रभु ! आपकी उदारता का दर्शन तो हुआ लेकिन आपकी कपटता का भी दर्शन हुआ। आप अपने चरण के नीचे कौन सी वस्तु दबा रखी है ? तब प्रभुने उत्तर दिया कि वह मन की शांति है। वह जिन्हे चाहिए वे मेरे चरण में आये। मेरी शरण में आये। ऐसी मन की शांति मात्र म्युजियम में विना किसी शर्त के प्राप्त होती है (कन्डीशन एप्लाय विना) वर्तमान समय में ८ नं. होल में रखे हुये आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसाजी महाराजश्री के प्रसादी के सिंहासन का प्रजर्वेशन कार्य किया गया, इस के अलांवा पूरे म्युजियम में मात्र भौजन कक्ष वातानुकुलित (ए.सी.) नहीं था वह भी प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से वातानुकलित कर दिया गया है।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अगस्त-२०१६

रु। ६६,८००/- श्री प्रवीणभाई पटेल परिवार शिकागो।
रु। ६६,९००/- अश्विन पी. पटेल, जयेन्द्र ए. पटेल, पंकज जी. चोकसी, महेन्द्र पटेल, मनीष एन. पटेल (शिकागो मंदिर, लेकेलेन्ड मंदिर, एटलान्टा मंदिर तथा बायरन मंदिर)
रु। ३०,१५०/- राजूभाई पटेल (राजूमामा) डेट्रोईट
रु। २५,०००/- डॉ. डी. जे. भावसार महेसाणा कृते चंपाबहन डी. भावसार
रु। १६,८००/- गौरांग पटेल परिवार - शिकागो
रु। ११,०००/- प.भ. खोडाभाई कोह्याभाई पटेल पू. धर्मकुल की प्रसन्नता के लिये माधवगढ (प्रांतीज)
रु। ११,०००/- दशरथभाई पूनमभाई पटेल - असलाली
रु। १०,१००/- वी.के. चौधरी - शिकागो।
रु। ६,८००/- जशुभाई ए. चौधरी - शिकागो
रु। ६,७००/- ए. जे. जौधरी - शिकागो
रु। ६,७००/- समीर चौधरी - शिकागो
रु। ५,००१/- वीणाबहन घनश्यामभाई मोदी श्रीजी की प्रसन्नता के लिये चाणस्मा - कृते केतुल तथा रीया।
रु। ५,००१/- एक हरिभक्त - न्यु राणीप।
रु। ५,०००/- अ.नि. प्रफुलभाई पुरुषोत्तमदास भावसार - मणीनगर।
रु। ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी - बोपल।
रु। ५,०००/- अ.नि. शांताबा मोहनलाल जोषी तथा अ.नि. कनैयालाल मोहनलाल व्यास की स्मृति में - अमदावाद - कृते वसुमती बहन कथा द्रेश व्यास
रु। ५,०००/- घनश्यामभाई नागजीभाई सुहागिया - खोखरा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अगस्त-२०१६)

ता. ०६-०८-२०१६ प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री कृते संदीपभाई शेठ
ता. ०७-०८-२०१६ (प्रातः) श्री प्रवीणभाई मंगलदास पटेल - नवरंगपुरा कृते आयरा केयूरभाई पटेल
(दोपहर) श्रावण मास के निमित्त आयोजित समूह महापूजा श्री स्वामिनारायण म्युजियम - नारणपुरा
(सायंकाल) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल सत्संग समाज कृते नयनाबहन सुमनभाई पटेल - साबरमती
ता. ०८-०८-२०१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरन्टो केनेडा ८ वें पाटोत्सव निमित्त - कृते शशीकान्तभाई।
ता. १४-०८-२०१६ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कांकरिया (रामबाग) कृते महंत स्वामी।
ता. २१-०८-२०१६ भीखाभाई, रमेशभाई, बलदेवभाई, आई.एस.एस.ओ. स्वा. मंदिर एलनटाउन (डांगरवावाला)
(दोपहर) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल गांधीनगर - कृते महंत स्वामी।
ता. २५-०८-२०१६ पटेल रमेशचन्द्र मगनलाल - हलवद।
ता. २८-०८-२०१६ (प्रातः) नीपाबहन निलेषभाई पटेल - अमेरिका।
(दोपहर) विमलकुमार चंदुभाई पटेल - अमेरिका कृते अनिताबहन।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मोक्ष की मूल कथा है

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

सच्चा मित्र कौन ? ताली बजाकर तमाकू बनाकर खानेवाला नही, लेकिन सच्चा मित्र कौन ? जो श्रीहरि का मार्ग बतावे वह । यथार्थरुप में उत्तमोत्तम, दिव्य, अमृत के समान है कथा । भगवान के चरित्र की कथा जो सुनावे वही सच्चा मित्र है । अज्ञानीजीव को खबर ही नहीं कि इस कथा में, चरित्र में स्वाद क्या है, उसका जो स्वाद करावे वह सच्चा मित्र है । अज्ञानीजीव को ख्याल नही होता, कथा में क्या आनंद होता है ? एकबार कथा में आने के बाद ही इसका ख्याल आयेगा ।

एक गाँव में पांच संत गये । सत्संगी भक्त बहुत कम थे । दो ही भक्त थे । संतो सेक हे कि आप यही रुकिये, कल हमारे यहां भिक्षा स्वीकार करके जाइयेगा . संतो ने तथास्तु कह दिया । इस भक्त को विचार आया कि संतो के तथा भगवान के प्रसाद में क्या दूं ? बगल में चार भैंसो का मालिक रहता था, वह देसाई था । उनके पास जाकर कहते है कि हमे दूधचाहिये । क्यों इतना दूधकी जरुरत पडी ? हमारे यहाँ संत आये है, इस लिये महात्माओं को दूधचाहिये । यह सुनकर उसने कहा कि हमें दूधका पैसा नही चाहिये । वह धार्मिक भावना वाला था । संतो के पास दूधआया । संत उसे गरम करके दही बना दिये । दूसरे दिन प्रातः उस दहीं को झोली में लटका दिये, शीखडं बनाने के लिये । उस देसाई को हुआ कि साधु महात्मा आये हैं जाकर मिलूं तो सहीं । कुछ सत्संग का लाभ मिलेगा । वाणी का लाभ मिलेगा । मंदिर न रहने से संत गृहस्थ के घर पर रुके । कोने में झोली लटकती देखकर कहता है, यह क्या ? आप का दिया हुआ दूध? अरे रे, मेरा दूधआप लोग बिगाड दिये । यह क्या किये ? आप देखते रहिये । एक संत कथा वांचते रहे, दूसरे संत झोली उतारकर चीनी डालकर मथकर शीखंड तैयार कर दिये . उस देसाई का दिमाग बिगड़ गया, अरर.... साधु अर्थात् साधु अच्छा हुआ जो साधु हो गये । घर होते तो घर विगाडते । साधु होकर मेरा दूधबिगाड दिये । इस को बिगाड दिये अब यह दूधनहीं रहा, नही घी बना । उसी समय ठाकुरजी की थाल भोग में रखी गई । ''जमो थाल जीवन जाऊं वारी...'' । भक्तों ने कहा स्वामीजी ? ये देसाई मेर पास ही रहता है । वडी भावना के साथ दूधदिया है । पैसा नहीं लिया । संतो ने कहा, उसे रोको कहो कि प्रसाद लेकर जाय । संतो ने प्रसाद दिया तो देसाईने कहा कि बिगाडा हुआ हम नहीं खाते । हम लोग तो तसला भरकर दूधपीते है ।

लेकिन भगवान का दूधहै, मना नही करना चाहिए, यह प्रसाद है । ऐसा कहने पर उसने चीखने के लिये थोडा सा अंगुली से अपने मुख से डाला तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगा - लाइये - लाइये, पांचसो सातसो ग्राम जितना शीखंड अकेले खा गया । बाद में कहने लगा, बापू आप यहाँ पर एक हमे रुकिये । प्रतिदिन इस तरह का मंथन बनाइये । जब-जब वह हरि भक्त मिलता तब तब कहता कि आपके स्वामीजी कब आनेवाले हैं । जब दूधचाहिए तब हमसे दूधमांग के लेजाइयेगा । शीखंड उसके मुख में लग गया । जब तक चीखा नहीं था तब तक अभाव था जब चीख लिया तो सभी अभाव चला गया । उसके मन में हुआ कि इसमें आनंद ही आनंद है ।

मित्रो ! जब तक इस जीवात्मा को कथा का रसास्वाद नहीं मिला तब तक महिमा का ख्याल नहीं आयेगा । जब सच्चे दिल से एक बार भी सत्संग कथा का आस्वाद ले लिया तो विना चखे चलेगा ही नहीं । स्वामिनारायण भगवान कथा की महिमा समझाते हुये कहे कि प्रतिदिन भगवान के मंदिर जाना चाहिए । और कार्यास्तत्र कथा वार्ता, श्रव्याश्च परमादरात प्रतिदिन भगवान के मंदिर में जाना चाहिए और भगवान की

कथा-वार्ता परम आदर पूर्वक सुननी-करनी चाहिए । इतनी छोटी सी बात में उस देसाई का कल्याण हो गया । इसलिये सत्संगी मात्र को ख्याल रखना चाहिए कि मोक्ष की मूल कथा है।

•

सर्वस्व का दान

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मित्रो ! आज हमलोग व्यवहार की तथा प्रेम की भाषा को समझते है । भागवत के दशम स्कन्धमें श्रीकृष्ण जन्म के समय नंदबाबाने भूदेवों को दो लाख गायो का दान किया ऐसा लिखा है । यह वात सुनकर तुरत यह विचार आयेगा कि नंद बाबाने दो लाख गायों का दान किया तो उनके पास कितनी गायें रही होंगी । इसके अलांवा यह प्रश्न होगा कि इतनी गायों को बांधने की कहाँ व्यवस्था रही होगी।

लेकिन एकवात बहुत विचार करने लायक है कि भाषा दो प्रकार की होती है। एक व्यवहार की दूसरी प्रेम की भाषा एक बराबर दो होता है। यह व्यवहार की भाषा है । लेकिन प्रेम की भाषा बड़ी अनोखी होती है । उसे समझने के लिये स्वयं को प्रेमी बनना पडेगा । व्यवहार की भाषा में गिन्ती का खूब महत्व है । लेकिन प्रेम की भाषा में अन्तर के भाव का विशेष महत्व है। इस ऊपर की वात से यह भावात्मक विचार कहा जायेगा इसदो लाख की गायो के दान से यह भावार्थ निकलता है कि नंदबाबा के हृदय में पुत्र जन्म का इतना उत्साह था कि, हृदय में ऐसा भाव था कि दो लाख गायों को दान में दी हो इतना खुशी थी, उतना ही समर्पण तथा हृदय में आनंद था । सबसे बड़ी वात तो यह कि इस प्रकार की भावना वाले मनुष्य तथा ऐसी भावना को समझने वाले कलियुग में दिखाई ही नहीं देते। ऐसे लोगों का प्रभाव घटने लगा है। यदि हम सच्चे भाव वाले हों तो भगवान की कृपा से किया गया दान त्वरित फल कारक हो जाता है। समर्पण भी इसी तरह का फल देने वाला है।

एकबार महाराज गढडा में विराजमान थे । सभा में कथा वार्ता, सत्संग की वात चल रही थी । उसी समय एक भूदेव उस सभा में आये, जहाँ जगह थी वही जाकर बैठ गये। सभा चलती हो – उस समय आगे आकर बैठे यह महाराज को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था । उस भूदेव को महाराज की प्रकृति का ख्याल था। इस लिये चालू कथा में पैर स्पर्श करने नहीं आते थे। सभा में यथा स्थान पर बैठ गये। थोड़े समय के बाद जब सभा पूर्ण हो गई तो भूदेव आकर महाराज का चरण स्पर्श किये । महाराज को कुछ भेंट देना चाहिये इस भाव से मन में बड़े आनंद के साथ अपनी पगड़ी में से एक रुपया निकालकर पैर में रख दिये।

कृपालु परमात्मा बड़े दयालु है, अन्तर्यामी हैं। वे उस गरीब भूदेव की स्थिति जानते थे । वे तुरंत बोले हे भक्तराज ! भूदेव ! आपने इस रुपये को मेरे चरण में समर्पित कर दिया, इस रुपये से अच्छी पगड़ी खरीद लिये होते तो। देखिये आप की पगड़ी कितनी फटी हुई है ।

भूदेव बोले हे महाराज ! आपके पास कितने हरिभक्त आते हैं वे सभी कुछ न कुछ समर्पित करते हैं। यह देखकर मेरे मन में भी होता है कि – अपने इष्टदेव को कुछ समर्पित करुं । लेकिन मेरे पास कुछ था ही नही जो आपके चरण में समर्पित करुँ । परंतु अभी दश-पन्द्रह दिन पूर्व एक शेठ अपने घर बुलाकर भोजन कराया और एक-एक रुपया दक्षिणा दिया। वही यह रुपया है। ज्यो यह दक्षिणा मिली तुरंत मन में संकल्प किया कि आपके चरण में समर्पित करुं। वही रुपया अपनी पगड़ी में छिपा रखा था । आज वह संकल्प पूर्ण हुआ। मैं धन्य हो गया महाराज, मैं धन्य हो गया। भूदेव जब यह वात कर रहे थे उस समय मुक्तानंद स्वामी वहाँ बैठे थे । महाराजने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि स्वामी ! ए भूदेव सर्वस्व दान किये हैं। इनके पास जो था वह एक रुपया मात्र था। वह भी मेरे चरण में समर्पित कर दिये। यही प्रेम की भाषा है।

मित्रो ! इस वात से यह समझा जासकता है कि भूदेव का सर्वस्व दान प्रेम की भाषा है। हृदय के प्रेमानंद से जो समर्पित किया जाय वह जिस तरह जमीन में वीज बोने के बाद समयान्तर में बड़ा वृक्ष होकर फल देने वाला हो जाता है। वही स्थिति उपरोक्त बात में चरितार्थ हो रही है।

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "वाणी-वर्तन तथा व्यवहार से भी किसी को दुःख नहीं देना चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

पहले स्वभाव सुधारने की जरुरत है । पहले मानव बनना है। बाद में भक्ति करनी, क्योंकि स्वभाव नहीं सुधरे तो भक्ति काममें नही आवे । हम छल-कपट करते है वह भगवान देखते हैं। फल को देने वाले परमात्मा हैं। व्यक्ति जैसा कर्म करता है वैसा उसे फल मिलता है । जब हम अपने मंदिर के उत्सव प्रसंग में देखते है कि छोटे-छोटे उत्सव प्रसंग में लोगो को कितना गुस्सा आ जाता है । दर्शन करते समय भी धक्का-मुक्की करते हैं। कितने लोग तो जान बूझकर करते हैं । लेकिन हमे उनके जैसा नहीं बनना है। हमें यह सोचना चाहिये कि वह व्यक्ति कैसे आया है ? दूर से आया है ? कितनी मुश्किली में आया है ? "श्री नरनारायणदेव की शरण में आने का आज अवसर मिला है" कितना काम छोड़कर आया है ? जाकर काम भी पूरा करना है, इत्यादि आप कभी विचार करते हैं। यदि ऐसा विचार करेंगे तो कभी गुस्सा नहीं आयेगा । धक्का-मुक्की नहीं करेंगे । अब आप को स्वयं विचार करना है क्या उचित है, क्या अनुचित है।

एक बार एक राजा के महल के बाहर एक अन्धा बैठा था। वहाँ से राजा की सवारी निकलने वाली थी। इस लिये राजा के सेवकने विचार किया कि इसे लात मारकर यहाँ से हटा देते हैं। ऐसा करने वह जाता है तो अन्धा कहता है कि भाई ! मैं थक गया हूँ, यहाँ से चला जाऊंगा। कुछ देर बाद राजा का प्रधान निरीक्षण करने निकला, उसने कहा कि आप यहाँ से चले जाइये अभी राजा की सवारी आयेगी। सूरदासने कहा हाँ अभी चला जाता हूँ। लेकिन सूरदास वहीं बैठे रहे। इतने में राजा की सवारी आ गई। राजा सूरदास को वहाँ बैठा देखकर नीचे उतरकर पूछे कि सूरदासजी आप यहाँ क्यों बैठे है ? आप थके लग रहे हैं। आपको कोई जरुरत है ? सूरदासने कहाँ कि राजन् ! हमें कोई जरुरत नहीं है। मैं थक गया था इस लिये यहाँ बैठ गया। यह प्रक्रिया को कोई दूसरा व्यक्ति देख रहा था। राजा के जाने के बाद वह आया और पूछा कि सूरदास आप को दिखाई देता नहीं तो आपको कैसे पता चला कि ये राजा हैं ? सूरदासने कहा कि उनकी विवेकपूर्ण वाणी से। वाणी में ही सब गुण-दोष है। नम्रता महाराज को अच्छी लगती है। मात्र व्यक्ति का अहंकार उसे अपने अहं के सामने आने नही देता, जिससे व्यक्ति का नाश हो जाता है । मात्र अहं रखने से आपका खराब स्वभाव प्रदर्शित होता है। यदि किसी को आप कह देगें तो छोटे नही हो जायेंगे ? कोई हानि नहीं हो जाएगी । आपको अपनी वाणी पर ही नियंत्रण रखना है । किसी का अपमान नहीं करना चाहिए। कितने लोग कहते हैं कि हम इतनी बार शास्त्र का वांचन किये। लेकिन परिणाम कुछ नहीं आता उसका कारण यह की आप स्वयं शास्त्र के वचन का पालन नहीं करते। जो कहते हैं स्वयं करते नहीं, यदि वे कुछ कहें तो उसका कुछ भी परिणाम नहीं आयेगा। शास्त्र का पठन करने से तभी लाभ होगा जब पढकर उसके नियम-रीति-के अनुसार वर्तन किया जाय । अन्यथा पानी पीटने वाली वात होगी। शास्त्र के सार को गहन रीति से समझकर वैसा परिपालन करना सीखिये, बाद में अन्य से कहिये तो निश्चित है आप की वात सार्थक होगी।

भगवान वेद व्यास को कोई पूछा कि सभी शास्त्रों का सार क्या है ?

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीणनम् ॥

चार-वेद-अड्ठारह पुराण का ही सार है कि परोपकार करना पुण्य है दूसरों को पीडा देना पाप है।

इन्ही दो वात में सभी सार समाया हुआ है। इसी तरह हम सभी के जीवन में ''धर्म-भक्ति'' तथा प्रेमरस में तरबोर करने वाली प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के द्वारा दिये गये नियम में सब कुछ समाया हुआ है। यदि अपने जीवन में इसे उतारदेंगे तो निश्चित ही कभी कोई खराब कार्य नहीं होगा । ऐसा सभी लोग नियम ले किं रोज प्रातः उठकर प.पू. गादीवालाका स्मरण करके नियमको पांच वार बोलना है -

मेरी वाणी, वर्तन, व्यवहार से किसी जीव को दुःख नहीं होगा । ऐसा करने से आपका जीवन निर्मल होगा और आप सुखी होंगे । किसी समय ऐसा हो जाय तो प्रायश्चित करने का भी नियम रखें। प.पू. गादीवालाजीने जिस तरह इस प्रकार की आज्ञा दी है उसे अवश्य की जियेगा, दूसरा नियम शक्य हो तो उसे भी किजीयेगा । स्वभाव सुधारने का नियम तो अवश्य लीजियेगा।

●

"प्रेम" - "परमात्मा" को प्राप्त करने का मार्ग

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

परमात्मा को प्रसन्न रखने के दो साधन है। सेवा तथा स्मरण । तीन धन्टे प्रतिदिन सेवा-स्मरण करें । प्रहलादजी कहते हैं कि दो साधन से भगवान अवश्य मिलते हैं। भगवान की सेवा तथा स्मरण। दक्षिणा देने से पुण्य मिलता है। लेकिन सेवा-स्मरण करने से परमात्मा की प्रसन्नता मिलती है। सेवा, स्मरण स्वयं को करना है। दान तो किसी अन्य से भी कराया जा सकता है । गुसाईजी महाराज के २५२ वैष्णव की कथा में पद्मनाभदासकी कथा आती है । वे बड़े गरीब थे । भगवान को चने के छिलके का भोग लगाते थे। वह भी भगवान को प्रिय लगता था । भगवान को तो भाव चाहिए। भगवान-सेवा-स्मरण से प्रसन्न होते है। गजेन्द्र कहाँ पढा था। मात्र अपनी स्मरण शक्ति से ही भक्ति की और भगवान आ गये । वह कहाँ तपस्या-अष्टांगयोग किया था। मात्र भक्ति से भगवान प्रसन्न होते हैं।

बहुत संपत्ति से भगवान प्रसन्न नही होते। कईबार तो पैसा भगवत सेवा भगवद् भजन में विध्न बन जाता है। भगवान को प्रसन्न करने के लिये बहुत पढने की जरुरत नहीं है। आप को ईश्वर की जरुरत हो तो खूब श्रद्धा से सेवा-स्मरण करो। ईश्वर को योग्य लगेगा तो चमत्कार दिखायेंगे । ईश्वर की सेवा स्मरण करिये फिर देखिये कितना परिवर्तन होता है । सेवा में अहंकार नहीं होना चाहिए . इस जगत को बनाने वाले का चमत्कार तो देखिये - फूल में सुगंधकौन भरता है ? एक छोटे से बीज में बडे कैसे बनता है ? माता में दूधकहाँ से आता है ? जगत ईश्वर के चमत्कार से भरा हुआ है। व्यवहार मार्ग में भी यही श्रद्धा होती है डॉक्टर कितने केस बिगाड देते है फिर भी उसमें श्रद्धा रखकर रोगी-वारंवार वहीं जाता है।

भगवान कहाँ खाते है ? जो भोग में रखा जाता है वह कम क्यों नहीं होता ? यह तर्क पढे लिखे लोग करते हैं। लेकिन भगवान तो भाव के भूखे हैं। जब आप श्रद्धा से प्रेम से भगवान को भोग लगाते हो तो भगवान उसमें रस-सार खींच लेते हैं। परमात्मा रस भोक्ता है। धंधा करना कोई पाप नहीं है, लेकिन धंधा करते समय ईश्वर को भूल जाना पाप है। एकनाथजी पूरे दिन प्रभु सेवा, प्रभु भजन करते रहते थे । उनकी ऐसी भक्ति देखकर प्रभु को उनके ऊपर दया आ गई । उन्हें ऐसा हुआ कि मैं स्वयं अपने भक्त की सेवा में सहयोग करुं।

भगवान ब्राह्मण का रुप लेकर वहाँ आये। आकर

कहे कि, भाई ? आप अपने यहाँ हमें नौकरी में रखेंगे ? एकनाथजीने कहा कि हमारे यहां कहाँ नौकरी में जरुरत है ? मैं प्रतिदिन प्रभु की सेवा-भजन में लगा रहता हूँ। भगवानने कहा कि मैं आपके ठाकुरजी की सेवा में मदद करुंगा। एकनाथने कहा कि आप की इच्छा हो तो रहिए। एकनाथने पूछा कि भाई, आपका नाम क्या है ? भगवानने कहा शिरपाण्डी। भगवान एकनाथ के यहाँ १२ वर्ष तक इस तरह सेवा में रहे। जिसे चंदन लगाना है वही आज चंदन घिस रहा है। तुलसीदासचंदन घिसे, तिलक देत रघुवीर। यही भक्ति की महिमा है।

●

स्वरुप निष्ठा - सर्वोपरि की

- वीणाबहन नरेन्द्रभाई ठक्कर (बोपल)

अक्षराधिपति श्रीजी महाराजने वचनामृत में धर्म, ज्ञान, वैराग्य, कल्याण, मोक्ष ऐसे शब्दों का वारंवार उपयोग किया है। इस वात को सत्संगी होने के नाते समझना चाहिए। महाराज गढडा मध्य के १६ वें वचनामृत में कहा है कि ''स्वरुप निष्ठा पक्की रखने से धर्मनिष्ठा भी सुरक्षित रहती है। स्वरुप निष्ठा क्या है ? पक्का निश्चय, भगवान की सच्ची पहचान। जैसे आम के वृक्ष की सच्ची पहचान हो तो वही मन में रहता है। इसी तरह श्रीहरि में पक्की निष्ठा हो तो वह मन में बनी रहनी चाहिए। महाराज के स्वरुप में विशेष श्रद्धा-विश्वास-ऐश्वर्य-गुण-स्मृति के साथ नाम स्मरण करना चाहिए। धुन-कीर्तन-चेष्टा-ध्यान करते रहना चाहिए। श्रीहरि के स्वरुप में एक निष्ठा भक्ति करते हुए कथा-वार्ता सुननी चाहिए। चातुर्मास में नियम लेना चाहिए। व्रत-उत्सव में सहयोग की भावना रखनी चाहिए।

भगवान श्रीहरि नित्य-निरंजन-निर्विकार-सर्व व्यापक दिव्य साकार-सर्व नियंता - अन्तर्यामी होते हुये भी सभी लोग उन्हे पहचान नहीं सकते, सभी को मिलते भी नहीं है। सच्चे हृदय से जो महाराज को जानता है वही महाराज को प्रिय लगता है। जिस तरह सच्चे हृदय से द्रोपदी ने भगवान को याद किया तो भगवान तुरंत वहाँ आकर उसका सहयोग करते हैं। श्रीहरि विना विलम्ब के भक्त की पुकार को सुनकर वहाँ पहुंच जाते हैं। हम कीर्तन गाते है - आज कलियुग में परचा पूरे प्रभुजी स्वामिनारायण सत्य छे - जामनगर के जवेरबाई को श्रीहरिने अद्‌भुत परिचय दिया था। अपने आश्रितों के लिये महाराजने रामानंद स्वामी से दो वरदान मांगे थे जो हम सभी जानते है सर्वावतारी प्रभु श्रीहरि बड़े दयालु हैं। इस लिये पहचान की आवश्यकता है। वचनामृत में कहे कि ''कदाचित आप भगवान की आज्ञा पालन करने में भूल करेंगे तो भगवान माफ कर देंगे लेकिन स्वरुपनिष्ठा में थोड़ी भूल होगी तो मोक्ष मार्ग से गिर जायेंगे। आपके स्वरुप निष्ठा में निश्चय होगा तो अन्तकाल में जब प्रभु लेने आयेंगे उस समय आपको पहचानने में विलम्ब नहीं होगा। अपने इष्टदेव कल्याण दाता है। आत्यंतिक कल्याण की जिसे चाहना है वे उनकी शरण में आयें। आध्यात्मिक मार्ग में एकाग्र चित्त से स्वरुप में निष्ठा हो तो अन्यत्र चित्त नहीं जायेगा। दूसरी निष्ठा में दोष आता है लेकिन स्वरुप निष्ठा में कमी हो तो जन्म मिलता है।

નીચેના મહામંદિરોમાં નિત્ય દર્શન માટે

જેતલપુર : www.jetalpurdarshan.com
મહેસાણા : www.mahesanadarshan.org
છપૈયા : www.chhapaiya.com
ટોરડા : www.gopallalji.com
નારણઘાટ : www.narayanghat.com
વડનગર : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
પ્રયાગ : www.prayagmilan.org
અયોધ્યા : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
ઈડર : www.gopinathjiidar.com
નારણપુરા : www.sankalpmurti.org

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव का भव्य उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की शुभ सानिध्य में एवं भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की उपस्थिति में सावन कृष्ण अष्टमी अर्थात् श्री कृष्ण जन्माष्टमी की रात ९-०० से १२-०० के दौरान मंदिर के प्रसादी के सभा मंडप में संप्रदाय के सुप्रसिद्ध गायक कलाकार प.भ. जयेशभाई सोनी के सुंदर मधुर कंठ से नंद संत द्वारा रचित कीर्तन भक्ति, महामंत्र धून और भव्य रास हुआ था। हजारो हरिभक्तोने भक्ति रस में डूब कर खूब धन्य हुए थे। रात को १२-०० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलों से पूर्ण पुरुषोत्तम श्री कृष्ण भगवान के जन्मोत्सव की आरती धूमधाम पूर्वक हुई थी। समग्र आयोजन कोठारी जे.के. स्वामी, श्री नारायणमुनि स्वामी एवं संत मंडल बहुत सुंदर रुप से आयोजित किया था। (शास्त्री नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) डांगरवा (वांटो) अषाढ कृष्ण ११ को महिला मंडल द्वारा ठाकुरजी को विभिन्न प्रकार के फल, चोकलेट, खिलौने, ड्राईफ्रुट, फूल आदि के सुंदर हिंडोले बनाकर भगवान श्रीहरि को झुलाकर सुंदर दर्शन करवाये थे। कुछ बहनो ने दोपहर को ३-०० से ५-०० तक कीर्तन-भक्ति कथा वार्ता की थी।

दिनांक १६-८-२०१६ को हिंडोलाकी पूर्णाहुति की गई थी। (महिला मंडल डांगरवा वांटो)

हिम्मतनगर निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर में महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से दिनांक १४-८-२०१६ को निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर में सुंदर समूह महापूजा का आयोजन करवाया गया था। १०० जितने भाविक हरिभक्तोंने महापूजा में बैठकर लाभ लिया था। इस अवसर पर जेतलपुर धाम के महंत पू. स.गु. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं प्रांतिज मंदिर के महंत स्वामी गोपालजीवनदासजी आदि संतोने पधारकर पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभी हरिभक्तो को कथा वार्ता का लाभ दिया था। इस अवसर पर यजमान परम भक्ति जगदीशभाई बाबुभाई पटेल थे।

(मितेश पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीनगर कलोल

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल श्रीनगर मे अषाढ कृष्णा-२ से श्रावण कृष्ण-२ पर्यंत भुज कच्छ के राजानी बाबुभाई आदि परिवार के सहयोग से ठाकुरजी के समक्ष कलात्मक हिंडोला बनाकर शाम ५-०० बजे आरती उतारकर भगवान को झुलाया गया छा।

यहाँ चातुर्मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धमासना देश के शा. स्वामी सत्संगसंकल्पदासजी ने श्रीहरि वनविचरण की कथा करके हरिभक्तो को सुंदर लाभ दिया था। कलोल के शा.स्वामी प्रेमस्वरुपदासजीने ५ दिन तक सुंदर कथा का लाभ दिया था। बहुत सारे हरिभक्त भाई बहनोने कथा का श्रवण कर धन्यता का अनुभव किया था। (कोठारीश्री दशरथबाई सोमाभाई श्रीनगर कलोल

मंदिर)

विसनगर में त्रिदिनात्मक ज्ञान सत्र

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से विसनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा अ.नि. प.भ. महेन्द्रभाई जयंतीलाल भावसार के स्मरणार्थ उनके पुत्र प.भ. धवलभाई भावसार (ओस्ट्रेलीया) एवं प.भ. संदीपभाई भावसार परिवार के यजमान पद पर सुंदर त्रिदिनात्मक ज्ञान सत्र का आयोजन हुआ था । जिसमें प्रथम दिन शास्त्री स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर सेक्टर-२) ने जीवन में धर्म का महत्व दूसरे दिन स.गु. महंत शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी (नारायणपुरा मंदिर) ने सत्संग एवं कुसंग और तीसरे दिन शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने अपने संप्रदाय के गहन विषयों को सुंदर दृष्टान्त के साथ सरल भाषा शैली में भक्तों को समझाया था । इस अवसर पर संतो में महंत शा.छोटे पी.पी. स्वामी, शा.स्वा. नारायणमुनीदासजी, शा.स्वा. विश्वप्रकासदासजी, पू. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी, महंत शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी, हरिचरण स्वामी आदि संत पधारे थे।

पूर्णाहुति के अवसर पर श्री हरि के आठवे वंशज प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । आशीर्वाद देते हुए लालजी महाराजने कहा कि संप्रदायकी विशेषता यह है कि प्रत्येक संत हरिभक्त श्री नरनारायणदेव गादी के लिए समर्पित है । विसनगर युवक मंडल नजदीक के गाँव में जाकर श्रीहरि के सिद्धांतो को समझाने का अवरत कार्य करता है । यजमान परिवार भी निष्ठा वाला है, जिस से हमें विशेष आनंद हो रहा है । विसनगर सत्संग पर श्री नरनारायणदेव की कृपा इसी प्रकार बनी रहे ऐसी प्रार्थना।

तीसरे दिन के ज्ञान सत्र में बड़ी संख्या में भक्तों ने लाभ लिया था समग्र कार्यक्रम का मार्गदर्शन प.भ. उदयनभाई महाराजाने किया था।

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में कलात्मक हिंडोला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ मंदिर के महंत स्वामी स.गु. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से अषाढ कृष्ण-२ से श्रावण कृष्णा-२ पर्यंत सुरेन्द्रनगर मंदिर में ठाकुरजी की समक्ष कलात्मक सुवर्ण जडित हिंडोला बनाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था । अंतिम दश दिन के दौरान सभा मंडप में १२ थर्मोकोल के हिंडोला बनाकर भक्तों को ठाकुरजी के दर्शन कराए थे । श्रीहरि को जलाभिषेक का लाभ अनेक भक्तों ने लिया था । समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने किया था। (शैलैन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगठ (ता. हलवद श्रीहरिकृष्णधाम)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से रणजीतगढ श्रीहरिकृष्ण धाम मंदिर में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सभा मे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन-अर्चन संत हरिभक्तोने किया था।

प्रासंगिक सभा में पू. भक्तिनंदन स्वामी एवं मोरबी मंदिर के महंत स्वामीने देव धर्मकुल एळं अपनी गुरु परंपरा समझाई थी । सभा संचालन मोरबी मंदिर के महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीने सुंदर रुप से किया था । (अनिल दूधरेजीया)

गुरु पूर्णिमा गुरूपूजन के लिए धांगध्रा से मूलीधाम यात्रा

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवं आशीर्वाद से तथा पू. भक्तिहरिस्वामी (मूली मंदिर स्कीम कमिटी सभ्यश्री) की प्रेरणा से ध्रांगध्रा से धर्मकुल आश्रित १५० हरिभक्तो ने बस में मूली धाम पधारकर गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सभा में प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन कर खूब धन्य बने थे। (अनिल दूधरेजीया)

विदेश सत्संग समाचार

छपिया धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से छपिया धाम स्वामिनारायण मंदिर में दिनांक ३१ जुलाई २०१६ रविवार को सायं ४-०० से ८-०० बजे तक सुंदर सत्संग सभा हुई थी । स्वामी सत्यस्वरुपदासजीने सुंदर वनविचरण की कथा सुनाई और सभी हरिभक्तों के साथ मिलकर सुंदर कीर्तन भक्ति की थी। ठाकुरजी के समक्ष भरत कला के भव्य हिंडोला का आयोजन रुप रुपल काकडिया के द्वारा किया गया था। प्रहलादभाई पटेलने मंदिर की प्रवृत्तियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की थी। समग्र अवसर पर प्रहलादभाई, दीपक, हेमेंद्रभाई, दर्पेश, नरेन्द्र, प्रेमचंदभाई, घनश्यामभाई आदि ने यजमान बनकर सेवा की थी।

(प्रहलादभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो इटास्का का १८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से शिकागो इटास्का के श्री स्वामिनारायण मंदिर का १८ वाँ पाटोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ।

पाटोत्सव प्रसंग के अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण नवाहन पारायण यहाँ के महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर हुइ थी। १८ घंटे की महामंत्र धून, पोथीयात्रा, नव दिन कथामृत पान, हरियाग, ठाकुरजी का महाभिषेक, छप्पन भोग, अन्नकूट और ब्लड डोनेशन का सुंदर आयोजन किया गया था । इस अवसर पर शिकागो के हरिभक्तों को दर्शन देने के लिए हमारे आत्मिय प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । जिनके आगमन से यहाँ का सत्संग समाज बहुत उत्साहित हुआ था। उनके शुभ आशीर्वाद का लाभ प्रत्येक सभा में मिलता रहता था । जिससे सत्संग को खूब बल मिला । प.पू. बड़े महाराजश्री भी यहाँ सभी भक्तों को मिलकर खूब प्रसन्न हुए थे। इस अवसर को सुंदर बनाने के लिए सत्संग के लाडले धर्ममार्तन्ड विश्ववंदनीय प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । जिनके आशीर्वाद प्राप्त कर सत्संग में अपनापन लग रहा था । इनकी मधुर वाणी और व्यक्ति प्रेम से छोटे से छोटा बालक उत्साहित हो जाता था। और उनके समक्ष बैठता था । सभी सत्संगी बहनो को दर्शन-आशीर्वाद प्रदान करने के लिए प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवाला पधारी थी।

अगल-अलग धाम के संतो में स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (अहमदाबाद), मुक्तस्वरुप स्वामी (अटलांटा, श्रीजी स्वरुप स्वामी (बायरन), जयकृष्ण स्वामी (लोस एंजिलिस) एवं माधव स्वामी (डेट्रोयट) तथा यहां के पुजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी आदि संतोने भगवान के सर्वोपरि होने का एवं धर्मकुल के महात्म्य की बाते की थी।

सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद प्रेरणा से शिकागो मंदिर में विराजमान देवों को सोने के मुकुट के लिए महंत शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजीने तथा पुजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजीने हरिभक्तो के समक्ष बात की थी और धर्मकुल की उपस्थिति में ही सभी भक्तों ने सोने की बरसात कर दी थी। १८ वें पाटोत्सव के यजमान के रुप में, मुख्य यजमान गं.स्व. साकर बहन आत्माराम पटेल परिवार (मनुभाई-सकुंतलाबहन, विनोदभाई, सरोजबहन, जगदीशभाई और हेतल बहन) तथा अ.नि.प.भ. चंचलबहन रामदास पटेल परिवार (विक्टर भाई और रोशनी बहन सोलिया पटेल), सह यजमान के रुप में प.भ. नारायणभाई अमीदास पटेल परिवार वडु (विनोदभाई-ताराबहन, किशनभाई-रीताबहन) पारायण के मुख्य यजमान प.भ. जिग्नेशभाई-रिपलबहन पटेल परिवार मोखासन, सह यजमान प.भ.

रमणभाई-कपिलाबहन पटेल परिवार (राजेश-मीनाबहन, संजय-पुनीताबहन), महाभिषेक के यजमान प.भ. जसुभाई-कमुबहन चौधरी परिवार (बालवा), सह यजमान प.भ. डॉ. मनोजभाई-राजेश्वरीबहन ब्रह्मभट्ट परिवार, अन्नकूट के मुख्य यजमान प.भ. भरतभाई ज्योत्सनाबहन चौधरी परिवार (पलियड), प.भ. भूपेंद्रभाई-वर्षाबहन चौधरी परिवार, सह यजमान प.भ. वासुदेवभाई-नीताबहन पटेल परिवार (मोखासण), हरियाग के यजमान प.भ. रायसंगभाई-मणिबहन चौधरी परिवार (माणेकपुर), धर्मकुल पूजन के यजमान प.भ. जगदीशभाई-हेतलबहन पटेल एवं प.भ. विक्टरभाई-रोशनीबहन सोलिया (पटेल), संत पूजन के यजमान प.भ. ठाकोरभाई नाभूभाई-जयश्रीबहन पटेल (उवारसद) आदि हरिभक्त यजमान बनकर अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुये थे।

निज मंदिर में विराजमान देव का महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलों से वेदोक्त विधिसे शोडषोपचार पूर्वक संपन्न हुआ था। हजारो हरिभक्तों ने इस अलौकिक दर्शन का लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया था। धर्मकुल सभी भक्तों पर प्रसन्न रहे ऐसी प्रार्थना।

(वसंत त्रिवेदी, शिकागो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरंटो कनाडा का आठ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा ब्रह्मनिष्ठ अपने संतो की उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरंटो कनाडा का ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया।

दिनांक ५-८-२०१६ को पारायण के उपलक्ष्यमें पोथीयात्रा निज मंदिर से कथा स्थल तक निकाली गई थी। दिनांक ५-८-२०१६ से ७-८-२०१६ पर्यंत त्रिदिनात्मक श्रीहरि लीलाचरित्रामृत की कथा शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (सिध्धपुर मंदिर महंतश्री) के सुमधुर कंठ से संपन्न हुई।

दिनांक ६-८-२०१६ को सुबह महाविष्णुयाग की संपूर्ण विधिपुजारी आशीषभाई ने कराई थी, जिनका साथ विरलभाई मेहता खूब सुंदर प्रकार से दिया था। इस में बहुत सारे हरिभक्त उपस्थित हुए एवं लाभ लिये थे।

दिनांक ७-८-२०१६ को सिद्धपुर के महंत शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी, बोस्टन से पधारे महंत स्वामी विवेकसागरदासजी, पुजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी (शिकागो मंदिर) आदि संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडषोपचार अभिषेक प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से किया गया।

पारायण की पूर्णाहुति के पश्चात प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन आरती, संतो का पूजन, यजमानो का सम्मान किया गया। इसके पश्चात निज मंदिर में देव के समक्ष सत्संगी बहनों द्वारा बनाये गये विविधव्यंजनो का सुंदर भव्य अन्नकूट कराया गया। अन्नकूट की आरती संतो के साथ यजमानश्री ने की थी। तीनों दिन सभी भक्तों को महाप्रसाद दिया गया। ५०० जितने हरिभक्तों ने अन्नकूट दर्शन कर महाप्रसाद लेकर धन्य हुए थे।

तीन दिन तक संतो के ज्ञान आशीर्वाद सभी हरिभक्तो को मिले थे। छोटे बड़े सभी हरिभक्तों की सेवा प्रेरणा रुप थी। प्रेसि. श्री दशरथभाई चौधरीने आभार विधिकी थी। सभा संचालन सेक्रेटरी श्री रसिकभाई पटेलने खूब सुंदरतो से किया था। पाटोत्सव में विभिन्न सेवा में हरिभक्तों ने यजमान बन कर आचार्य एवं संतो की प्रसन्नता प्राप्त की थी। इस पाटोत्सव का सब को सुंदर पूर्वक याद रहेगा।(भाईलालभाई पटेल, टोरंटो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया प.पू. लालजी महाराजश्री का १९ वाँ जन्मोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने

स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया सेन्ट्रल न्युजर्सी में शनिवार को वीकेंड के दौरान ५-०० बजे से ८-०० बजे तक महंत शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी तथा पार्षद मूलजी भगत की प्रेरणा से सभी हरिभक्तो ने साथ मिलकर प.पू. लालजी महाराजश्री का १९ वाँ पाटोत्सव हर्षोल्लास के साथ भव्यता से मनाया था। सर्वप्रथम युवा हरिभक्तोने कीर्तन भक्ति की थी पश्चात श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून हुई थी। पश्चात संतो एवं भगत जीने प.पू. लालजी महाराजश्री की तस्वीर का पूजन किया था। संतो के पश्चात यजमान परिवार एवं सभी उपस्थित हरिभक्तोने पूजन अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

इसके बाद महंत स्वामीने श्रीहरि के दिव्य कुल धर्मकुल की महिमा एवं उनके द्वारा होने वाले सत्संग की अविरत प्रवृतियों की विस्तृत जानकारी दी थी। यजमानो का सन्मान हुआ था एवं कोलोनिया मंदिर के आनेवाले ११ वें पाटोत्सव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारेंगे उसकी जानकारी दी गई थी। अंत में हनुमान चालीसा, जन मंगल पाठ, संध्या-शयन आरती और थाल हुआ था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपियाधाम पारसीपनी अमेरिका प.पू. लालजी महाराजश्री का १९ वाँ जन्मोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेप पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर छपियाधाम पारसीपनी में रविवार के वीकेंड में शाम को ५-०० से ७-०० के दौरान मंहत स्वामी की प्रेरणा से सभी हरिभक्तों ने मिलकर प.पू. लालजी महाराजश्री का १९ वाँ जन्मोत्सव धामधूम से मनाया। हरिभक्तों द्वारा भजन-कीर्तन के बाद सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री की तस्वीर का महंत स्वामी और यजमान परिवार तथा सभी हरिभक्तोंने पूजन अर्चन किया था। स्वामीने समग्र धर्मकुल की सत्संग के लिए की जानेवाले प्रवृत्तियों की सुंदर जानकारी एवं महिमा बताया था। सभा में इस अवसर पर यजमानो का सम्मान किया गया था। ठाकुरजी के समक्ष प्रत्येक दिन सुंदर कलात्मक हिंडोले के दर्शन कराए गए थे। संध्या-आरती थाल एवंस मूह में जन मंगल पाठ और शयन आरती के बाद नित्य नियम कर सभी अलग हुए थे।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन न्युजर्सी

श्री नरनारायणदेप पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में महंत स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से सत्संग प्रवृति सुचारु रुप से चल रही है। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर सभा में सभी संत हरिभक्तों ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। स्वामीने श्रीजी महाराज द्वारा अपने स्थान पर स्थापित किए दोनो देश के गादी के आचार्य महाराजश्री की गुरु परंपरा समझाई थी। पश्चात् वीकेंड में प.पू. लालजी महाराजश्री के १९ वें जन्मोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री की तस्वीर का पूजन कर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं बालको ने सुंदर केक काटकर हमारे प्राण प्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री का १९ वाँ जन्मोत्सव मनाया था। स्वामी और हरिभक्तोंने साथ मिलकर ठाकुरजी को सुंदर कलात्मक हिंडोला बना कर झुलाए थे।

(बलदेवभाई पटेल)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

1

2

3

(१) जन्माष्टमी प्रसंग पर अमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव समक्ष आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा मंदिर के चौक में रास-गरबा करते हुये हरि भक्ति।(२) बोस्टन मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा आचार्य महाराजश्री तथा ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री । (३) नारायणघाट मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से पारायण प्रसंग में कथामृत पान कराती हुई सांख्ययोगी बहने तथा पोथी का पूजन करता हुआ यजमान परिवार।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) शिकागो मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) केलीफोर्निया मंदिर में जन्माष्टमी के दिन ठाकुरजी का फूलो के अलंकार का दर्शन ।(३) डिट्रोईट मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के १९ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर केक काटते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।(४) लेस्टर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन ।(५) टोरेन्टो केनेडा मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन ।

Prafull Kharsani